आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711 पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2015-17

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

प्रसार शिक्षा निदेशालय

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर

पशु पालन नए आयाम

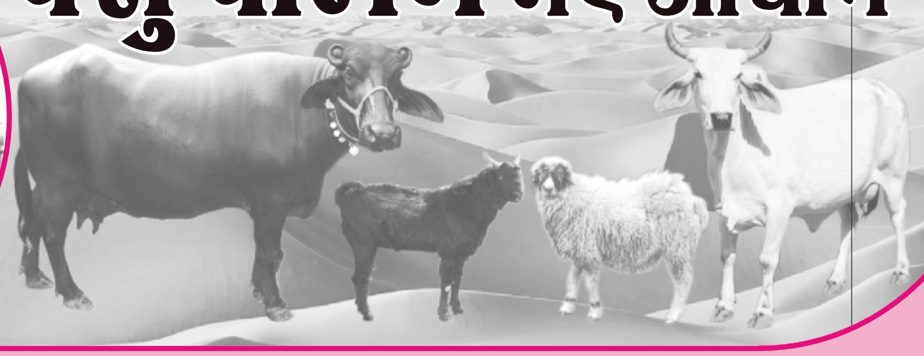

परिकल्पना एवं निर्देशन - प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

वर्ष : 3 अंक :8 बीकानेर, अप्रैल, 2016 मूल्य : ₹ 2.00

प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत

कुलपति की कलम से.....

कृषि और पशुपालन केन्द्रित बजट से ग्राम विकास को मिलेगी मजबूती

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाईयों–बहनों!

केन्द्रीय सरकार द्वारा प्रस्तुत आम बजट इस बार लीक से हटकर कृषि और किसानों पर केन्द्रित रखा गया है। फसल बीमा, सिंचाई योजना, किसानों के विकास हेतु कृषि ऋण, ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों का जाल बिछाने, मनरेगा पर जोर देकर कौशल विकास कार्यक्रम सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाएं हैं। ग्रामीणों की पारिवारिक आय बढ़ाने के लिए चार योजनाएं बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। पशुधन संजीवनी योजना में पशुओं का स्वास्थ कार्ड बनेगा। उन्नत ब्रीडिंग प्रौद्योगिकी योजना से अच्छी नस्लों के पशु संवर्द्धन और विकास कार्यों को एक नई दिशा मिलेगी। राष्ट्रीय जेनोमिक केन्द्र से पशुधन संपदा के विकास के लिए वैज्ञानिक प्रयासों को प्रोत्साहन मिलेगा। ई–पशुधन हाट योजना किसानों को ई–पोर्टल से जोड़ने के लिए घोषित की गई है। भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने इस वर्ष के प्रारंम्भ में किसानों के लिए एक तोहफे के रूप में "प्रधानमंत्री फसल बीमा" योजना को अपनी मंजूरी प्रदान की है। यह किसानों के कल्याण के लिए लीक से हटकर एक अहम् योजना है। यह योजना सरकार द्वारा किसानों की फसल के संबंध में अनिश्चितताओं को दूर करने के लिए किया गया प्रयास है। इसमें किसानों की फसल को प्राकृतिक आपदाओं के कारण होने वाली हानि को प्रीमियम का भुगतान देकर एक सीमा तक कम किया जा सकेगा। यह योजना खरीफ और रबी की फसलों के साथ ही वाणिज्यिक और बागवानी फसलों के लिए भी सुरक्षा प्रदान करती है। मनुष्य द्वारा निर्मित आपदाओं जैसे आग लगना, चोरी होना या सेंध लगना आदि इस योजना के अंतर्गत शामिल नहीं हैं। ग्रामीण और कृषि प्रधान बजट से गांव स्वावलम्बन का सपना पूरा हो सकेगा।

(प्रो. ए. के. गहलोत)

कृषि उन्नति मेला, पूसा, नई दिल्ली में राजुवास प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए माननीय कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी, प्रमुख शासन सचिव (कृषि) एवं शासन सचिव (पशुपालन)

राष्ट्रीय भेड़ व किसान मेला अविकानगर में राजुवास की प्रदर्शनी स्टॉल का अवलोकन करते हुए माननीय केन्द्रीय कृषि एवं किसान कल्याण राज्यमंत्री डॉ. संजीव कुमार बालियान

।।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।।

मुख्य समाचार

राजुवास के विशाल कृषि एवं पशु विज्ञान मेले में सैंकडों किसान और पशुपालक हुए लाभान्वित

27 फरवरी को पहली बार संभाग के सैंकडों कृषकों एवं पशुपालकों का एक दिवसीय कृषि एवं पशु विज्ञान मेला पशुओं की विभिन्न नस्लों, फसल एवं फल प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार वितरण के साथ बीकानेर में संपन्न हो गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय व उपनिदेशक कृषि एवं पदेन परियोजना निदेशक, आत्मा, बीकानेर के संयुक्त

तत्वावधान में आयोजित इस मेले में बड़ी संख्या में पहुँचे किसानों और पशुपालकों ने मेले में लगी 60 स्टॉलों पर कृषि एवं पशुपालन के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक और ज्ञान सहित प्रदर्शित सजीव पशुधन, फसल व उद्यानिकी के उत्पादों कृषि यंत्रों–उपकरणों, आदान और मॉडल, पैनल, चार्ट्स से जानकारी प्राप्त की। महापौर श्री नारायण चौपड़ा और केन्द्रीय कृषि मंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. जीतेन्द्र सिंह चौहान और वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने फीता काटकर मेले का शुभांरभ किया। अपरान्ह् पश्चात् पूर्व सिंचाई मंत्री श्री देवी सिंह भाटी और वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. जीतेन्द्र सिंह चौहान ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। समारोह की अध्यक्षता वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने की। मेले में पशुपालकों, कृषकों और उद्यानिकी में पुरस्कार देकर प्रोत्साहित किया गया है। मेले में 60 प्रदर्शनी स्टॉल में कृषि और पशुपालन से सम्बद्ध तकनीक और उत्पादों का प्रदर्शन किया गया। पहली बार आयोजित पशुओं की प्रतियोगिता में गाय, भैंस, अश्व, भेड़, बकरी, ऊँट की विभिन्न केटेगेरी में पालकों को नकद पुरस्कार दिये गए। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित पशुओं में राज्य में पाई जाने वाली 6 देशी गौवंश की सभी नस्लों, भैंस, बकरी और भेड़ की उन्नत नस्लों को भी मेलार्थियों ने देखा। विश्वविद्यालय की कुक्कुटशाला में पल रही कुक्कुट की 7 विभिन्न किस्मों के अलावा एमू का अंडा, जापानी बटेर और खरगोश की प्रजातियां मेले का मुख्य आकर्षण रही। किसानों को मेले में फसल उत्पादन तकनीक, बीज, खाद, उर्वरक, हरा चारा उत्पादन और संरक्षण सहित पशुओं से तैयार उत्पादों को भी देखने का अवसर मिला। थाई बेर (सेव की साईज)

और एक कृषक द्वारा उत्पादित आलू के उत्पादों को भी कौतूहल से देखा। प्रदर्शनी में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के बीकानेर स्थित संस्थानों, केन्द्रों, कृषि उद्यान एवं सहकारिता विभाग, स्वामी केशवानन्द कृषि विश्वविद्यालय के अलावा इफको, कृभको, आयुर्वेट, वाटर–शैड सहित अन्य विभागों ने मेले में आयोजित प्रदर्शनी में कृषि के विभिन्न आदान (खाद, बीज, उर्वरक), उन्नत कृषि उपकरण, सिंचाई की सूक्ष्म तकनीकों, सौर ऊर्जा के उपकरणों को प्रदर्शित कर कृषकों को उपयोगी जानकारी अपनी स्टॉल में दी। मेले में पहुँचे कृषकों और पशुपालकों को कृषि, उद्यान, पशुपालन, डेयरी, मत्स्य, सहकारिता नाबार्ड और जल संरक्षण योजनाओं के बारे में विषय विशेषज्ञों और वैज्ञानिकों ने व्याख्यान देकर संवाद किया। मेले में नई दिल्ली के डीडी किसान चैनल और बिग एफ. एम. रेडियो भी सहयोगी रूप में शामिल हुए। विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक और मेला संयोजक प्रो. आर.के. धूड़िया ने बताया कि पशुओं की विभिन्न प्रतियोगिताओं में 120 पशुओं ने भाग लिया। मेले में कृषि विभाग के उपनिदेशक एवं पदेन परियोजना निदेशक आत्मा, बी.आर. कड़वा, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा, वेटरनरी कॉलेज, नवानियां, उदयपुर के अधिष्ठाता प्रो. आर. के. नागदा एवं अनुसंधान निदेशक प्रो. राकेश राव भी मौजूद थे।

राजुवास को देश के सर्वोच्च संस्थानों की रैंकिंग मिली

देश के विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में "राजुवास रोल मॉडल" के रूप में उभर कर सामने आ रहा है। यह तथ्य "कॉलेजदुनिया डॉट कॉम" द्वारा किए गए राष्ट्रव्यापी ऑनलाईन सर्वे में सामने आया है। ऑनलाईन सर्वे विश्वविद्यालय और महाविद्यालयों की सभी कैटेगेरी को शामिल करते हुए किया गया। "कॉलेजदुनिया" द्वारा अखिल भारतीय स्तर और राज्य में शीर्ष विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों के सर्वे उपरांत रैंकिंग में वेटरनरी विश्वविद्यालय (राजुवास) और उसके संघटक महाविद्यालयों ने शीर्ष रैंकिंग प्राप्त की है। ऑनलाईन सर्वे के मुताबिक देश के पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों में वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर (राजुवास) ने पहला स्थान बनाया है। स्टेट एग्रीकल्चरल यूनिवर्सिटीज समूह में कृषि एवं पशुचिकित्सा विश्वविद्यालयों में राजुवास ने द्वितीय रैंक हासिल की है। राजस्थान राज्य में किए गए ऑनलाईन सर्वे में सभी 63 विश्वविद्यालयों एवं संस्थानों की कार्यप्रणाली, उपलब्धियों और संसाधनों के आधार पर किए गए आंकलन में वेटरनरी विश्वविद्यालय को पांचवीं रैंकिंग प्राप्त हुई है। प्रथम चार रैंकिंग के सभी विश्वविद्यालय निजी क्षेत्र में है। वेटरनरी विश्वविद्यालय राजकीय क्षेत्र में स्थापित विश्वविद्यालयों में पहले स्थान पर रहा है। "कॉलेजदुनिया डॉट कॉम" ने देश के 47 पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालयों का भी ऑनलाईन सर्वे किया जिसमें पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर ने दूसरी पोजीशन हासिल की है। सर्वे के मुताबिक नामक्कल वेटरनरी महाविद्यालय को मेरिट में 8.2 अंक तथा बीकानेर के वेटरनरी महाविद्यालय को 8.1 अंकों के साथ दूसरा स्थान मिला है। इस सर्वे में विश्वविद्यालय के ही वल्लभनगर (उदयपुर) स्थित संघटक पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय को सातवीं रैंकिंग प्राप्त हुई है।

किसानों के सतत विकास में 5 एफ व हाइड्रोपोनिक्स तकनीक का योगदानः राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन

देश की बढ़ती आबादी को पर्याप्त, पौष्टिक, स्वस्थ और सुरक्षित भोजन उपलब्ध करवाने के लिए नए वैज्ञानिक उपायों और तकनीकी परिवर्तन को किसान और पशुपालकों तक पहुंचा कर उन पर अमल करना होगा। खेती और पशुपालन के एकीकृत प्रयासों से ही हम खाद्य जरूरतों को पूरा कर पांएगें। किसानों के सतत विकास के लिए खाद्य आहार, चारा, ईंधन और उर्वरक (5–एफ) और हाइड्रोपोनिक्स तकनीक पर वेटरनरी विश्वविद्यालय में आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला में ये विचार व्यक्त किये गए। वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन एवं तकनीक केन्द्र तथा आयुर्वेट लिमिटेड, नई दिल्ली के संयुक्त तत्वावधान में 28 फरवरी को आयोजित कार्यशाला में 245 विषय विशेषज्ञों, वैज्ञानिकों, प्रगतिशील पशुपालकों, किसानों उद्यमियों और स्नातकोत्तर छात्रों ने भाग लिया। कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में आयुर्वेट के प्रबंध निदेशक एम. जे. सक्सेना, विशिष्ट अतिथि के रूप में केन्द्रीय कृषि मंत्री, भारत सरकार के वैज्ञानिक सलाहकार डॉ. जितेन्द्र सिंह चौहान, वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के पूर्व सहायक महानिदेशक डॉ. कुसुमाकर शर्मा एवं ए.आई.आर.ई.ए. के फसल और अनुसंधान निदेशक पद्मश्री डॉ. वी.पी. सिंह ने सम्बोधित किया। समारोह में अतिथियों ने कार्यशाला की स्मारिका का विमोचन किया। कार्यशाला में वेटरनरी महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. त्रिभुवन शर्मा (बीकानेर) प्रो. विष्णु शर्मा (जयपुर), डॉ. आर. के. नागदा (वल्लभनगर, उदयपुर) और आयुर्वेट के मुख्य कार्यकारी अधिकारी डॉ. अनूप कालरा एवं अमित जैन ने अलग अलग विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किए। पशुधन चारा संसाधन प्रबंधन और तकनीक केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक एवं आयोजन सचिव प्रो. आर. के. धूड़िया ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यशाला में राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान के निदेशक डॉ. एन.वी. पाटिल, काजरी के अध्यक्ष डॉ. एन.डी. यादव, श्री कुलदीप शर्मा, श्री हंसराज नायक, डॉ. आर.के. सांवल, डॉ. एच.के. नरूला एवं आई.सी.ए.आर संस्थानों के वैज्ञानिक भी शामिल थे।

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण तथा अनुसंधान केन्द्र, टोंक की स्थापना के लिए 50 एकड़ भूमि राजस्थान सरकार को हस्तांतरित

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की अध्यक्षता में केन्द्रीय मंत्रिमंडल ने केन्द्रीय भेड़ और ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर तहसील मालपुरा (जिला टोंक) की 50 एकड़ भूमि वेटरनरी विश्वविद्यालय के लिए राजस्थान सरकार को हस्तांतरित करने को मंजूरी प्रदान की है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत ने बताया कि यह जमीन लागत मुक्त आधार पर वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर को पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण तथा अनुसंधान केन्द्र की स्थापना के लिए दी गई है। कुलपति ने बताया कि अविकानगर में रिर्सच एण्ड ट्रेनिंग सेंटर स्थापित करने के लिए राज्य सरकार एवं यूनिवर्सिटी ने पहले से रूपरेखा तैयार कर रखी है। यहां दो अनुसंधान प्रयोगशाला बनाई जाएगी। एक लैब में पशुओं की बीमारियों की जांच होगी वहीं दूसरी लैब में पशु आहार, दूध व गोबर का परीक्षण होगा। विश्वविद्यालय यहां पशुपालन की उन्नत तकनीक से पशुपालकों को प्रशिक्षित भी करेगी। इसके साथ ही प्रदर्शन फार्म हाउस तैयार होगा। इस फार्म हाउस में पौष्टिक एवं उन्नत किस्म के हरे चारे उत्पादन का प्रदर्शन करने के साथ ही इसके बीज उत्पादन का काम भी प्रस्तावित है। पशुओं खासतौर पर बकरी और भैंस की उन्नत नस्लें तैयार कर उन्हें पशुपालकों तक पहुँचाने की दिशा में काम होगा। अविकानगर में केन्द्र की स्थापना से पारस्परिक लाभ के लिए विश्वविद्यालय और सीएसडब्यूआरआई के बीच सहयोग और मजबूत होगा। यह केन्द्र ग्रामीण लोगों विशेषकर महिलाओं को आजीविका सुरक्षा और लैंगिक समानता बढ़ाने का प्रशिक्षण देगा, ताकि ग्रामीण लोगों विशेषकर महिलाओं को सशक्त बनाया जा सके। साथ–साथ यह केन्द्र उत्पादकता बढ़ाने और पशु धन से लाभ कमाने के लिए कम लागत की पर्यावरण सहज तकनीकी भी प्रदर्शित करेगा।

नई दिल्ली में राष्ट्रीय कृषि उन्नति मेले में राजुवास की प्रदर्शनी में अपार जनसमूह उमड़ा

भारत सरकार के कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय और सी.आई.आई. के संयुक्त तत्वावधान में 19 से 21 मार्च, 2016 को नई दिल्ली में ''कृषि उन्नति मेले'' का आयोजन किया गया। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने 19 मार्च को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली में मेले का उद्घाटन किया। इस अवसर पर केन्द्रीय कृषि मंत्री श्री राधा मोहन सिंह, कृषि राज्य मंत्री डॉ. संजीव कुमार बालियान और श्री मोहन भाई कल्याण जी भाई कुंडरिया भी मौजूद थे। मेले में प्रदेश के पशुचिकित्सा व कृषि विश्वविद्यालयों में से एक मात्र प्रदर्शनी राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर द्वारा लगाई गयी। वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया के नेतृत्व में आयोजित प्रदर्शनी स्टॉल में पशुचिकित्सा में अनुसंधान, नवाचार और पशुपालकों के कल्याण की योजनाओं के बारे में मेले में पहुंचे लगभग दस हजार लोगों को दी गई। मेले में अपार जनसमुदाय पहुंचा। मेले में राजस्थान के कृषि मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी, राज्य के प्रमुख शासन सचिव (कृषि) श्रीमती नीलकमल दरबारी एवं पशुपालन शासन सचिव श्री कुंजीलाल मीणा ने भी प्रदर्शनी का अवलोकन किया।

राज्य बजट में कृषि–पशुपालन पर 5604.74 करोड़ रू. राशि का प्रावधान

सुराज का संकल्प

राज्य में आज भी अधिकतर जनसंख्या आर्थिक रूप से कृषि, पशुपालन, बागवानी, डेयरी, कृषि प्रसंस्करण और विपणन क्षेत्र पर आधारित है। राज्य की मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने वर्ष 2016–17 के बजट में कृषि एवं सम्बद्ध सेवाओं के लिए 5604.74 करोड़ रू. राशि का प्रावधान किया है जो कुल बजट का 5.62 प्रतिशत है। राज्य सरकार के सुराज संकल्प के अपने वादे के अनुरूप वर्ष 2016 में "ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट" के आयोजन की घोषणा की है। इस मेले के आयोजन के लिए 10 करोड़ रू. राशि का प्रावधान किया जाना प्रस्तावित है। इस आयोजन से राज्य के कृषि–पशुपालन परिदृश्य में नवीन तकनीक, अनुसंधान और प्रसार के कार्यों को नवीन आयाम मिल सकेगा। बजट में कृषि एवं उद्यानिकी सेवाओं जैसे पशुपालन, मत्स्य पालन, डेयरी आदि क्षेत्र के लिए 4850 करोड़ रू. का प्रावधान किया है जो 2015–16 के संशोधित अनुमान से 47.55 प्रतिशत अधिक है।

पशुपालन के लिए बजट प्रावधान

पशुचिकित्सा छात्रों की छात्रवृत्ति हुई 10 हजार रूपये

माननीय मुख्यमंत्री एवं वित्त मंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने पशुचिकित्सा में स्नातकोत्तर और वाचस्पति में अध्ययनरत विद्यार्थियों को 5 हजार रू. प्रतिमाह की छात्रवृत्ति को बढ़ाकर 10 हजार रूपये प्रतिमाह की घोषणा की है। इससे अध्ययनरत पशुचिकित्सा विद्यार्थियों की अर्से से की जा रही मांग की पूर्ति हो गई है। राज्य सरकार के इस निर्णय ने पशुचिकित्सा के महत्व को प्रतिपादित किया है। राज्य सरकार ने राज्य में पशुपालन सेवाओं के सुद्दढ़ीकरण के साथ–साथ पशुपालकों के लिए लाभकारी योजनाओं की भी घोषणा की है।

भामाशाह पशु बीमा योजना का सूत्रपात

राजकीय अनुदानित भामाशाह पशु बीमा योजना के सूत्रपात से दूध देने, भार ढ़ोने वाले और अन्य पशुओं को लाभ मिलेगा। इस योजना के तहत बीपीएल, अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के पशुपालकों को पशु–बीमा की प्रीमियम राशि का 70 प्रतिशत अनुदान एवं अन्य वर्ग के पशुपालकों को 50 प्रतिशत अनुदान देय होगा। इस योजना को भामाशाह योजना के साथ सम्बद्ध किया जायेगा।

पशुपालन सेवाओं का सुद्दढ़ीकरण

पशुपालन के लिए 262.35 करोड़ रू. का प्रावधान है जिसमें 66.96 करोड़ राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के लिए किया गया है। गांव–ढांणी तक पशुचिकित्सा सेवाओं को पहुँचाने के लिए एक हजार ग्राम पंचायतों में पशुचिकित्सा उपकेन्द्र खोले जाने की महत्वपूर्ण घोषणा की गई है। इस वर्ष के बजट प्रावधान में मुख्यमंत्री पशुधन निःशुल्क दवा योजना, पशु रोग नियंत्रण, नस्ल सुधार के लिए प्रावधान किये गए हैं। खुरपका–मुंहपका और पी.पी.आर. रोग नियंत्रण कार्यक्रमों के लिए तथा कृत्रिम गर्भाधान और बंध्याकरण कार्यों के लिए भी बजट में राशि का आंवटन किए जाने से राज्य के पशुधन को अधिक समृद्ध और सबल बनाया जा सकेगा।

उन्नत भारत अभियान के अन्तर्गत प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 120 पशुपालकों के लिए चार प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली द्वारा "उन्नत भारत अभियान" के अंतर्गत वेटरनरी विश्वविद्यालय में 120 कृषक–पशुपालकों के छः दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 26 मार्च से शुरू हो गये। विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि विश्वविद्यालय के 4 अलग–अलग केन्द्रों में शुरू ये प्रशिक्षण शिविर 31 मार्च, 2016 तक चलेंगे। प्रो. धूड़िया ने बताया कि 6 दिवसीय सघन प्रशिक्षण कार्यक्रम में वैज्ञानिकों, विषय विशेषज्ञों द्वारा हरा चारा उत्पादन और प्रबंधन सहित पशु पोषण के विभिन्न पक्षों के बारे में विस्तार से जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण के दौरान पशुपालकों को पशुधन अनुसंधान केन्द्रों का भ्रमण और आहार की विभिन्न तकनीकों के प्रायोगिक कार्यों की जानकारी भी दी जाएगी। अन्य प्रशिक्षण शिविरों में "पशु स्वास्थ्य प्रबंधन" विषय पर प्रशिक्षण पशु आपदा प्रबंधन एवं तकनीकी केन्द्र में प्रमुख अन्वेषक डॉ. प्रवीण बिश्नोई द्वारा तथा व्यावसायिक ब्रॉयलर उत्पादन और उन्नत डेयरी पशुपालन एवं प्रबन्धन विषयों पर दो प्रशिक्षण प्रमुख अन्वेषक प्रो. बसन्त बैस द्वारा प्रारम्भ किये गये है।

राष्ट्रीय भेड़ व किसान मेला अविकानगर में विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी स्टॉल को मिला द्वितीय पुरस्कार

केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर द्वारा मालपुरा (टोंक) में 28 मार्च को आयोजित राष्ट्रीय भेड़ व किसान मेले में वेटरनरी विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी स्टॉल को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया है। राष्ट्रीय मेले में राज्य के अन्य प्रांतों के साथ देश के पशुचिकित्सा संस्थानों ने बड़ी संख्या में प्रदर्शनी में शिरकत की। केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान के मालपुरा (अविकानगर) परिसर में आयोजित एक दिवसीय मेले में सरकारी क्षेत्र की प्रदर्शनी स्टॉल में वेटरनरी विश्वविद्यालय को द्वितीय स्थान मिला। मेले के मुख्य अतिथि भारत सरकार के कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्रालय के राज्यमंत्री डॉ. संजीव कुमार बालियान ने डॉ. निर्मल कुमार जैफ, प्रभारी अधिकारी वी.यू.टी.आर. सी., टोंक को द्वितीय पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति–पत्र एवं प्रतीक चिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया। समारोह में टोंक के क्षेत्रीय सांसद श्री सुखबीर सिंह जौनपुरिया व निदेशक डॉ. एस.एम.के. नकवी भी उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय की प्रदर्शनी स्टॉल में पशुपालन क्षेत्र में नवीन तकनीक और राज्य के पशुधन की समृद्धि के लिए किए जा रहे कार्यों को मॉडल, पेनल और चार्ट के माध्यम से प्रदर्शित किया गया जिसे सैकडों पशुपालकों और कृषकों ने सराहा।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वी.यू.टी.आर.सी., चूरू द्वारा 208 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 3, 8, 9, 16, 17, 18, 21 एवं 22 मार्च को गांव जवानीपुरा, मेघसर, छाजुसर, लोहसना, कांगड़, सोमासी, पायली एवं उदासर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 208 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

सिरोही केन्द्र द्वारा पशुपालकों का प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सिरोही द्वारा 10 मार्च को गांव अरटवाड़ा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 33 पशुपालकों ने भाग लिया।

बाकलिया (नागौर) केन्द्र द्वारा पशुपालन पर प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बाकलिया–लाड़नू द्वारा 9, 11 एवं 12 मार्च को गांव सुनारी, आडियन्ट एवं चन्द्राई में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 169 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर द्वारा पशुपालक प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 11 एव 14 मार्च को गांव सिमलवाड़ा एवं किसनपुरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 71 पशुपालकों ने भाग लिया।

कुम्हेर (भरतपुर) केन्द्र द्वारा प्रशिक्षण आयोजित

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 3 मार्च को गांव अभोरा में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 25 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., अजमेर द्वारा 156 पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 8, 15, 16, 17, 18 एवं 19 मार्च को गांव डूमाडा, चावण्डिया, देवनगर, नेडलिया, नांद एवं तिलोरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 156 पशुपालकों ने भाग लिया।

टोंक जिले में पशुपालकों का प्रशिक्षण सम्पन्न

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 9, 10 एवं 11 मार्च, 2016 को गांव इंडोकिया, सतोना एवं चुली में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 79 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., कोटा द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 4, 8, 10 एवं 11 मार्च को गांव शंकरपुरा, बंदा, अरड़खेड़ा एवं किचलहेडा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 120 पशुपालकों ने भाग लिया।

बोजुन्दा (चितौड़गढ) केन्द्र द्वारा पशुपालकों को प्रशिक्षण

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा (चितौड़गढ) द्वारा 3–4 मार्च को दो दिवसीय एवं 9–17 मार्च, आठ दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर केन्द्र परिसर में तथा 18 मार्च को गांव कठमोड़ में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 142 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

थाईलेरियोसिस व बेबेसियोसिस से पशुओं को बचाएं

थाईलेरियोसिस

यह तीव्र गति का रोग है जिसमें मृत्यु दर बछड़ों में बहुत अधिक है तथा यह मुख्यतयाः विदेशी/ सकंर गौनस्ल व सभी आयु वर्ग के मवेशियों मे पाया जाता है। देशी गायों में इस रोग के प्रति प्रतिरोधक क्षमता होती है।

कारण

- यह रक्त प्रोटोजाआ परजीवी थाईलेरिया स्पीशीज द्वारा उत्पन्न होता है व चीचड हायलोमा इस रोग को फैलाते हैं। चीचड़ पशु से खून चूसने के साथ इस रोग का संक्रमण कर देते है।

लक्षण

- तीव्र बुखार (107 डिग्री फॉरेनहाइट तक हो सकता है), एनीमिया (शरीर में खून की कमी)
- शरीर की गांठों में सूजन आना (लिम्फ लोड स्पष्ट व सामान्यकृत)
- आंख में सूजन व पानी गिरना व नाक से पानी आना
- शरीर में खून की कमी से कमजोरी, सांस लेने मे परेशानी व त्वचा का खुरदरा होना
- आंखों की श्लेष्मा झिल्ली का पीला होना, खांसी आना।

उपचार

- बूपारवाक्वोन (2.5 मिलीग्राम/कि.ग्रा शरीर भार की दर से) सिंगल इन्जेक्शन आई. एम.

रोकथाम

- पशु के शरीर पर व बाड़े में चीचड़ न रहने दें।
- पशु बाड़े में नियमित रूप से कीटनाशक दवाईयों का प्रयोग करें।
- पशुओं का टीकारण करवायें (रक्सावेक टी)

बेबेसियोसिस

इसे रक्त मूत्र रोग भी कहते हैं। पशु के शरीर में लाल रक्त कणिकाओं की कमी के कारण पशु को श्वास लेने में परेशानी होती है तथा पशु मुंह खोलकर हांफने लगता है।

कारण

- यह एक अन्तः रक्त प्रोटोजोवा परजीवी द्वारा फैलने वाला रोग है, जिसका जीन्स बबेसिया है।
- रोग फैलाने वाले अन्तः रक्त प्रोटोजोवा परजीवी चींचड़ में रहते हैं जो पशु के शरीर में प्रवेश कर बीमारी के लक्षण प्रकट करते हैं।
- जब ये चींचड़ पशु के शरीर से चिपककर उसका रक्त चूसते हैं तो यह परजीवी उसी कटे मार्ग से पशु के शरीर में प्रवेश कर रोग फैलाते हैं। तथा ये चींचड़ रक्त पीकर फूल जाते हैं व शरीर से अलग हो, जमीन पर गिर जाते हैं।
- ये परजीवी रक्त कणिकाओं में प्रवेश पाकर उन्हें तोड़ते रहते हैं।

लक्षण

- एकाएक तेज बुखार, सांस व हृदय गति बहुत तेज
- भूख नहीं लगना, सुस्ती, कमजोरी, जुगाली व खाना–पीना बन्द
- आंख शुरू में ईंट जैसी लाल व बाद में सफेद
- तेज बुखार के लक्षण के बाद हीमोग्लोबिनुरिया तथा पीलिया हो जाता है। मूत्र गहरे लाल से भूरे रंग का (कॉफी जैसा) जिसमें झाग बनते हैं व काफी समय तक रहते हैं। इसका कारण रक्त कणिकाओं का टूटना व हीमोग्लोबिन का निकलना होता है।
- ग्याभिन पशु में गर्भपात हो जाता है कन्वल्सन (तड़फना), कोमा व अतं में मृत्यु हो जाती है।

उपचार

- इंजे. बेरेनिल 0.8 से 1.6 ग्राम / 100 कि.ग्रा. भार से I/M
- लिवर टॉनिक, एन्टी हिस्टॅामिनिक,एन्टी पाइरेंटिक इत्यादि।

रोकथाम

- पशुशाला में नियमित रूप से कीटनाशक दवाईयों का छिड़काव।
- पशुओं को चींचड से मुक्त रखना।

डॉ. अन्जू चाहर,(मो.9413032068) डॉ. राजेन्द्र कुमार,
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।

अपने विश्वविद्यालय को जानें

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसधान केन्द्र सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)

वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा जिला स्तर पर पशुपालन अनुसंधान और नवीनतम तकनीक को गांव–ढ़ाणी तक पहुंचाने के उद्देश्य से श्रीगंगानगर जिले के सूरतगढ़ में पशुचिकित्सा एवं अनुसंधान केन्द्र की स्थापना की गई। वर्तमान में 11 हजार 532 वर्ग मीटर क्षेत्रफल में स्थापित इस भव्य केन्द्र में दो प्रयोगशाला कक्ष, एक प्रदर्शनी कक्ष, 4 प्रशिक्षण हॉल सहित 6 अन्य कक्ष और एक प्रशिक्षणार्थियों के आवास की सुविधा है। वर्तमान में एक–एक सहायक प्राध्यापक, परियोजना सहायक, तकनीकी सहायक सहित दो सहायक कार्मिक कार्यरत हैं। केन्द्र द्वारा 1 अप्रेल, 2014 से अब तक कृषकों और पशुपालकों के लिए 76 विभिन्न प्रकार के वैज्ञानिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। इनमें से 58 केन्द्र के बाहर प्रशिक्षण शामिल हैं। 3 कृषक दिवसों का आयोजन भी किया गया। जिससे लगभग 2352 किसान एवं पशुपालक लाभान्वित हुए हैं। केन्द्र किसानों एवं पशुपालकों के बहुमुखी उत्थान हेतु जिले के विभिन्न विभागों जैसे की पशु चल चिकित्सा इकाई, कृषि विभाग, उद्यान विभाग, आत्मा परियोजना, राज्य एवं केन्द्रीय बीज निगम, केन्द्रीय एकीकृत कीट प्रबंधन विभाग आदि के सहयोग से पिछले 2 वर्षो से प्रयासरत है। केन्द्र द्वारा जिले की स्थानीय समस्याओं को जानने के लिए सर्वेक्षण किया गया है। केन्द्र समय समय पर परिसर में एवं गांवों में जाकर प्रशिक्षण शिविर आयोजित करता है। केन्द्र ने मेरा गांव मेरा गौरव योजनान्तर्गत अमरपुरा ग्राम को गोद लेकर ग्रामवासियों को पशु नस्ल सुधार, उन्नत पशुपालन, पशुपोषण एवं नवीनतम तकनीकों की जानकारियां विशेष रूप से उपलब्ध करवाता है एवं ग्राम की प्रत्येक समस्या के निदान हेतु प्रयासरत है।

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–अप्रेल, 2016

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुँहपका एवं खुरपका रोग	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	भरतपुर, दौसा, बाँसवाड़ा, श्रीगंगानगर, चूरू, जयपुर, झुंझुनूं, सवाई–माधोपुर, धौलपुर, चित्तौड़गढ़, नागौर, अलवर, सीकर, अजमेर, बीकानेर, बाड़मेर
पी.पी.आर. रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, जयपुर, श्रीगंगानगर , बीकानेर, उदयपुर, नागौर, अजमेर, सीकर, कोटा
चेचक (माता) रोग	बकरी, भेड़, ऊँट	जयपुर, श्रीगंगानगर, जालोर, बीकानेर, हनुमानगढ़
गलघोंटू रोग	गाय, भैंस	अलवर, धौलपुर, जयपुर, सवाई–माधोपुर, बूँदी, अजमेर, दौसा, राजसमन्द, झुंझुनूं, बारां, सीकर, पाली, हनुमानगढ़
ठप्पा रोग	गाय, भैंस	जैसलमेर, चित्तौड़गढ़, राजसमन्द, बीकानेर, झुंझुनू, हनुमानगढ़, जालोर
फड़किया रोग	भेड़, बकरी	सवाई–माधोपुर, बाँसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, श्रीगंगानगर, अलवर, नागौर, धौलपुर, टोंक, जोधपुर
न्यूमोनिक पास्चुरेल्लोसिस	गाय, भैंस, भेड़, बकरी	अलवर, टोंक, सीकर, बीकानेर, हनुमानगढ़
बॉटूलिस्म	गाय	जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर
कंटेजियस कैपराइन प्लयूरो–न्यूमोनिया	भेड़, बकरी	जयपुर, झुंझुनू, श्रीगंगानगर, बारां
सर्रा (तिबरसा) रोग	भैंस, ऊँट, गाय	धौलपुर, नागौर, बाँसवाड़ा, हनुमानगढ़, भरतपुर
अन्तः परजीवी– गोल– कृमि, पर्ण–कृमि	गाय, भैंस, बकरी, भेड़	डूँगरपुर, बूँदी, धौलपुर, भरतपुर, सीकर, बाँसवाड़ा, कोटा, राजसमन्द, हनुमानगढ, श्रीगंगानगर
रानीखेत रोग	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा
इन्फेक्सीयस ब्रोंकाईटिस	मुर्गियां	अजमेर, जयपुर, श्रीगंगानगर, बीकानेर, अलवर, कोटा

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. त्रिभुवन शर्मा, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर, प्रो. ए.के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान, एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर। फोन– 0151–2204123, 2544243, 2201183

पशुओं में टीकाकरण की आवश्यकता

प्रायः यह देखा गया है कि पशुपालकों को बार–बार टीकाकरण की आवश्यकता के बारे में शिक्षित करने के बाद भी पशुपालक अपने पशुओं का सही समय पर समुचित रूप से टीकाकरण नहीं करवाते हैं जिसके कारण संक्रामक रोग होने की स्थिति में उन्हें प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बहुत ज्यादा आर्थिक नुकसान झेलना पड़ता है। टीकाकरण न होने पर बीमार पशुओं की कार्यक्षमता व उत्पादन में कमी आती है जिसकी वजह से अप्रत्यक्ष हानि होती है एवं बीमार पशु की मृत्यु से प्रत्यक्ष रूप से हानि होती है। पशुओं को विभिन्न संक्रामक रोग जैसे गलघोंटू, लंगड़ा बुखार, खुरपका–मुंहपका, ब्रुसेल्ला रोग, हिड़काव (रेबीज), भेड़– बकरियों में माता रोग, फड़किया रोग, मुर्गियों में रानीखेत रोग, माता रोग, गम्बोरो रोग इत्यादि से बचाव के लिए टीके उपलब्ध हैं जिनके बारे में निकटतम पशु चिकित्सालय जाकर संपर्क किया जा सकता है एवं उचित समय पर पशुओं को टीका लगवाया जा सकता है। यदि किन्हीं कारणों से सरकारी चिकित्सालय में टीकों की उपलब्धता न हो पाये तो भी पशुपालक को इतना सावचेत होना चाहिए कि बाजार में उपलब्ध टीकों से अपने पशुओं का टीकाकरण करवायें। टीकाकरण में आया खर्च बीमारी से हुए नुकसान की तुलना में लगभग नगण्य होता है। इसके साथ पशु को भी बीमारियों की तकलीफों से टीकाकरण द्वारा दूर रखा जा सकता है। पशुपालक भाई अप्रेल माह में बड़े पशुओं को गलघोंटू , लंगड़ा बुखार और खुरपका–मुंहपका तथा छोटे पशुओं में गलघोंटू, लंगड़ा बुखार व फड़किया रोग से बचाव के टीके लगवायें। छोटे पशुओं में माता के टीकों से भी माता रोग से बचाव करें। मुर्गीपालन करने वाले किसान पक्षियों की उम्र के हिसाब से पक्षियों का टीकाकरण करवायें।

– प्रो. ए. के. कटारिया, प्रभारी अधिकारी, एपेक्स सेन्टर, राजुवास (मो. 9460073909)

पशुपालन नए आयाम

फार्म–4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	:	बीकानेर (राज.)
2.	प्रकाशन अवधि	:	मासिक
3.	प्रकाशक का नाम	:	प्रो. आर. के. धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर
4.	मुद्रक का नाम	:	प्रो. आर. के. धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
5.	संपादक का नाम	:	प्रो. आर. के. धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	:	हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:	
	पता	:	निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्रों के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	:	लागू नहीं

मैं प्रो. आर. के. धूड़िया एतद्द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 30–3–2016

(प्रो.आर.के.धूड़िया)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

अपने स्वदेशी गौवंश को पहचानें

मालवी गौ नस्ल – गौरव प्रदेश का

मालवी नस्ल का प्राकृतिक प्रजनन क्षेत्र मध्यप्रदेश का राजगढ़, उज्जैन, शाहजहाँपुर तथा इनसे लगते सीमावर्ती क्षेत्र हैं। इस नस्ल के पशु राजस्थान के झालावाड़ क्षेत्र में भी पाए जाते हैं। मालवा क्षेत्र में उद्‌भव के कारण ही इसका नाम 'मालवी' पड़ा। मालवी नस्ल को 'महादेव पुरी' तथा 'मनथाणी' के नाम से भी जाना जाता है। इस नस्ल के पशुओं का रंग सफेद अथवा धूसर होता है तथा गर्दन, कंधे तथा पुठ्ठों का रंग लगभग काला होता है। इनके सींग घुमावदार और ऊपर की ओर मुड़े होते हैं। सींगों की लंबाई 20–25 से.मी. तक होती है। यह नस्ल भारी–भरकम बनावट की तथा कुछ गुणों में कांकरेज से मिलती जुलती है। नर का भार लगभग 499 कि.ग्रा. तथा मादा पशु का भार 340 कि.ग्रा. के करीब होता है। शरीर की ऊँचाई सांड में औसतन 134 से.मी. तथा गाय में 120 से.मी. होती है। मालवी नस्ल के पशुओं का शरीर गठीला होता है और ये अपनी उत्कृष्ट भारवाहक क्षमता के लिए जाने जाते हैं। इनकी अनुमानित दुग्ध उत्पादन क्षमता प्रति ब्यांत लगभग 915 कि.ग्रा. तक पायी जाती है। प्रथम ब्यांत के समय आयु लगभग 49 माह तथा ब्यांत अंतराल 16.6 माह होता है। सन् 2008 के एक शोध अनुसार इनकी 2002 तक पशु संख्या 53,700 मानी गयी है। इस नस्ल के सुधार एवं संवर्द्धन के लिए अभी तक झुण्ड पुस्तिका नहीं बनी है। वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग झालावाड़ वर्ष 2015–16 में क्रियाशील किया गया है। यहां पर मालवी गौ नस्ल के संरक्षण एवं संवर्द्धन का कार्य प्रारंभ किया जा रहा है।

निदेशक की कलम से...

दूध उत्पादन बढ़ाने के लिए समय पर गर्भाधान करवाएं

हमारा देश विश्व में दुग्ध उत्पादन में अग्रणी है। राजस्थान राज्य पूरे देश में सर्वाधिक दूध उत्पादन करने वाला दूसरा राज्य है। लेकिन हमारे यहां प्रति पशु दूध की उत्पादकता कम रहती है। गायों को संतुलित आहार और पूरा चारा देकर समय पर ग्याभिन करवाने से ही दूध उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। गाय के गर्म होने पर ठीक समय में गर्भाधान कराने से गर्भ ठहरने की अधिकतम संभावना होती है। गाय के गर्म होने के लक्षणों में उसकी आवाज करना (बोलना) भी शामिल है। पूर्ण गर्म अवस्था में गाय बहुत ज्यादा बोलती है और वह दूसरे पशुओं को चाटती है। गाय के गर्म होने का तीसरा लक्षण उसके पिछले हिस्से में अपनी पीठ को कमान की तरह काटने की अजीब हरकत करती है। बार–बार पेशाब का आना और भूख का कम लगना भी गाय के गर्मी में आने के लक्षण हैं। गाय का बार बार पूंछ उठाना भी इसका एक कारण है। साधारण अवस्था में वह बार बार पूंछ नहीं उठाती है। दूसरे पशुओं पर चढ़ना और जननेन्द्री में सूजन का आ जाना भी पशुओं में पाली की अवस्था को दर्शाता है। स्वस्थ गाय सामान्यतः 18 से 21 दिन के बाद पाली में आती होती है। गाय पाली की अवस्था में 18 से 22 घंटे तक रहती है। पशुपालकों को चाहिए कि वे समय रहते पशु के पाली में आने का ध्यान रखें तथा उसे सही समय पर गर्भित करवाये। यदि गाय समय पर गर्भित होगी तो ही दो ब्यांत के बीच अन्तराल 13–14 महीने का रहेगा तथा गाय अपने जीवनकाल में ज्यादा बार ब्यांह सकेगी। ऐसा करने पर पशुपालकों को दूध उत्पादन का भी अधिक लाभ मिलेगा। यदि पशुपालक अपने पशुओं से अधिक उत्पादन लेना चाहते हैं तो उन्नत नस्ल, उचित पोषण व स्वास्थ्य रक्षा के साथ–साथ सही समय पर प्रजनन भी बहुत जरूरी है। ऐसा करने पर ही पशुपालन किसानों व पशुपालकों की उन्नति का आधार बन सकता है।

प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, प्रसार शिक्षा निदेशक (मो. 9414283388)

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित ''धीणे री बात्यां'' कार्यक्रम

राजस्थान के समस्त आकाशवाणी चैनलों से प्रत्येक गुरूवार को प्रसारित **''धीणे री बात्यां''** के अन्तर्गत **अप्रेल, 2016** में वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर के वैज्ञानिकगण अपनी वार्ताएं प्रस्तुत करेंगे। राजकीय प्रसारण होने के कारण कभी कभी गुरूवार के स्थान पर इन वार्ताओं का प्रसारण अन्य उपलब्ध समय पर भी किया जा सकता है। पशुपालक भाईयों से निवेदन है कि प्रत्येक गुरूवार को प्रदेश के समस्त आकाशवाणी केन्द्रों के मीडियम वेव पर सायः 5:30 से 6:00 बजे तक इन वार्ताओं को सुनकर पशुपालन में लाभ उठाएं।

क्र.सं.	वार्ताकार का नाम व विभाग	वार्ता का विषय	प्रसारण तिथि
1	प्रो. (डॉ.) कर्नल ए. के. गहलोत, 9414138211 कुलपति, राजुवास, बीकानेर	प्रदेश में चारा प्रबंधन में वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रयास	07.4.2016
2	प्रो. आर.के. धूड़िया, 9414283388 निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर	तकनीकी हस्तान्तरण में प्रसार केन्द्रों की भूमिका	14.4.2016
3	डॉ. नरेन्द्रसिह राठौड़, 9799607070 जैव रसायन विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	पशु रोगों में जांच हेतु सैम्पल लेने एवं जांच करने की विधियां	21.4.2016
4	प्रो. त्रिभुवन शर्मा, 9414264997 अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर	आहार प्रबंधन से बढ़ाया जा सकता है पशु उत्पादन	28.4.2016

मुस्कान !

संपादक
प्रो. आर. के. धूड़िया
सह संपादक
प्रो. ए. के. कटारिया
प्रो. उर्मिला पानू
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संयुक्त निदेशक (जनसम्पर्क) से.नि.
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com
पशु पालन नए आयाम
मासिक अंक : अप्रेल, 2016

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवामें

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. आर. के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजुकेशन विजय भवन पैलेस राजुवास बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. आर. के. धूड़िया